कुमार जीवन - 17

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों के साथ :-** कुमारों का चित्र सदा बाप के साथ रहने का दिखाया है, तुम्हीं से खेलूं, तुम्हीं से खाऊं - यह चित्र देखा है सखे रूप से। सखा अर्थात् साथ। तो कुमारों को सखा रूप से **साथी रूप दिखाया है**, ग्वालबाल के रूप में दिखाया है ना। तो **अपने को सदा बाप के साथी समझकर तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बैठूं... सभी कुमार युगल मूर्त्त ही चलते हो। युगल हो या अकेले हो? कभी अकेले का संकल्प नहीं करना।**

➳ _ ➳ **साथी को सदा साथ रखो तो सदा खुश रहेंगे और दिन-रात खुशी में नाचते अपना और दूसरों का भविष्य बनायेंगे। अकेला कब न समझना - अकेला समझा और माया आई। कुमारों की यही कम्पलेन है कि हम अकेले हैं। यह साथ तो दुःख-सुख का साथी है। वह साथ तो माथा खराब कर देता।** तो युगल हो ना! प्रवृत्ति वाले नहीं हो, सुख की प्रवृत्ति मिल जाए और क्या चाहिए। हमारे जैसा साथी किसी को मिल नहीं सकता। **साथी को साथ रखना - साथ रखेंगे तो मन सदा मनोरंजन में रहेगा। (01-12-1978)**

➢➢ भगवान को साथी बनाने में और किसी देहधारी को साथी बनाने में अंतर

➳ _ ➳ भगवान प्रकाश की और ले जाता है

➳ _ ➳ यहाँ कोई खर्चा नहीं है

➳ _ ➳ वह निस्वार्थी है

➳ _ ➳ यह बेहद का है

➳ _ ➳ यह स्वर्ग में ले जाता है... वह नरक में ले जाता है

➳ _ ➳ **यह सदाकाल का साथी है... कभी साथ नहीं छोड़ेगा...**

➳ _ ➳ यह अदृशय है

➳ _ ➳ यह हमारी कमी कमजोरियों को दूर करता है / वह कमी कमजोरियां भर देता है

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ **कुमारों के साथ :– (1)** कुमार और ब्रह्माकुमार। प्रवृत्ति के जीवन में भी कुमार और ब्राह्मण जीवन में भी ब्रह्माकुमार। सिर्फ कुमार नहीं लेकिन ब्रह्माकुमार। अगर सिर्फ कुमार रहेंगे तो माया आयेगी। ब्रह्माकुमार रहेंगे तो माया भाग जायेगी। तो **जैसे ब्रह्मा आदि देव है ब्रह्माकुमार भी आदि रतन होंगे। आदि देव के बच्चे मास्टर आदि देव। आदि रतन समझेंगे तो अपने जीवन के मूल्य को जानेंगे। आप सब प्रभु के रतन, ईश्वर के रतन हो, तो आपकी कितनी वैल्यू हो गई। सदा अपने को आदि देव के बच्चे मास्टर आदि**

देव, आदि रतन समझो तो जो भी कार्य करेंगे वह समर्थ होगा व्यर्थ नहीं। कुमार जितना सर्विस में रहेंगे उतना मायाजीत रहेंगे। अपने को फ्री नहीं रखना।

➳ _ ➳ **अपने को अकेला न समझो, साथी को साथ रखो (2)** कुमार सब रीति से निर्बन्धन हैं। लौकिक ज़िम्मेवारी से भी निर्बन्धन और माया के बन्धनों से भी निर्बन्धन। कोई भी बन्धन के अधीन नहीं। **बन्धन मुक्त की निशानी है - सदा योगयुक्त।** योगयुक्त बन्धन-मुक्त जरूर होंगे। मन का भी बन्धन नहीं। लौकिक ज़िम्मेवारी तो खेल है। बन्धन की रीति से नहीं लेकिन **डायरेक्शन प्रमाण खेल की रीति से हंसकर खेलो तो छोटी-छोटी बातो में थकेंगे नहीं।** अगर बन्धन समजते हो तो तंग होते हो। क्या, क्यों का प्रश्न उठता है। लेकिन **डायरेक्शन प्रमाण खेल खेल रहे हैं ऐसा समझने से अथक रहेंगे। ज़िम्मेवार बाप है, आप निमित्त हैं। कुमार तो डबल निर्बन्धन हैं कोई पूँछ नहीं है।**

➳ _ ➳ **सदा लकी रहना, घबराना नहीं, अपने हाथ से भोजन बनाना बहुत अच्छा है। अपने लिए और बाप के लिए प्यार से बनाओ। पहले बाप को खिलाओ। अपने को अकेला समझते हो तो थक जाते हो। सदा यह समझो कि हम दो हैं, दूसरे के लिए बनाना है तो विधिपूर्वक प्यार से बनाओ तो बहुत अच्छा लगेगा।**

➳ _ ➳ **कुमारों का आपस में ग्रुप होना चाहिए, कभी कोई बीमार पड़े तो एक की डयुटी हो। एक-दूसरे की मदद कर सेवा करो। कभी भी पूँछ लगाने का संकल्प नहीं करना, नहीं तो बहुत परेशान हो जायेंगे। बाहर से तो पता नहीं चलता लेकिन अगर लगा दिया तो मुश्किल हो जायेगी। अभी तो स्वतन्त्र हो फिर ज़िम्मेवारी बढ़ जायेगी। सभी ने बाप को कम्पेनियन बनाया है ना?** तो एक कम्पेनियन छोड़कर दूसरा बनाया जाता है क्या? ये तो लौकिक में भी अच्छा नहीं माना जाता। तो कुमार कभी अपने को अकेला नहीं समझो यदि अकेला समझा, तो उदास हो जायेंगे।

➳ _ ➳ कुमार ज्वाला रूप बनकर ज्वाला जगाओ तो जल्दी विनाश हो जायेगा। योग की अग्नि तेज़ करो जो विनाश की ज्वाला तेज़ हो जाएं। कभी भी किसी बात में क्यों और क्या करने वाले तो नहीं हो ना? **किसी भी बात में क्यों क्या वह करते हैं जो मास्टर त्रिकालदर्शी नहीं।** जो तीनों कालों को जानते हैं वह 'क्यों', 'क्या', नहीं करेंगे। क्यों-क्या करने वाले छोटे बच्चे होते हैं, आप सब तो वानप्रस्थ तक पहुँच गये हो ना। वानप्रस्थ स्थिति में रहने से माया से परे रहेंगे। जितनी लाइन क्लीयर होगी उतना पुरूषार्थ की स्पीड तेज होगी। सबकी लाइन क्लीयर है?

➳ _ ➳ कुमार तो बहुत कमाल कर सकते हैं। रूहानी यूथ ग्रुप हो ना। आजकल के यूथ गवर्नमेनट को भी बदलना चाहते हैं तो बदल देते। वह करते हैं डिस्ट्रक्शन, नुकसान और आप करेंगे कनस्ट्रक्शन। आपको विनाश नहीं करना है। आप स्थापना करेंगे तो विनाश आपे ही हो जायेगा।

➳ _ ➳ **विघ्नों को अपने लिए पाठ समझो** कुमारियों को कहते हैं 100 ब्राह्मणों से उत्तम एक कन्या। और कुमार कितनों से श्रेष्ठ हैं। 7 शितलाओं के साथ एक कुमार दिखाते हैं तो आप 700 ब्राह्मणों से उत्तम हुए। कुमार हार्डवर्कर हैं, जो करना चाहें वह कर सकते हैं। हरेक कुमार को अपना ग्रुप तैयार करना चाहिए।

➳ _ ➳ आपस में रीस नहीं लेकिन रेस करो। **माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अंगद के मुआफिक ज़रा भी नहीं हिलो, नाखून से भी हिला न सके।** अगर जरा भी कमज़ोरी के संस्कार होंगे तो माया अपना बना लेगी। इसलिए **मरजीवा बनो, पुराने संस्कारों से मरजीवा। कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ है, आप उनके अनुभवी बनते-बनते पास विद् आनर हो जायेंगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लेना चाहिए।**

क्यों-क्या में नहीं जाना चाहिए। कुमार तो हैं ही सदा सेवाधारी। आलराउन्ड सेवा - मन्सा-वाचा-कर्मणा, सब में सेवाधारी। अगर इतने सब आलराउन्ड सेवाधारी हैं तो बहुत हैन्डस हो गये। आप सब बहुत कमाल कर सकते हो। **(30-11-1979)**

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ स्वयं को सदैव आदि रतन समझ कर हर कार्य करो

➳ _ ➳ बाबा को अपना युगल बनाओ

➳ _ ➳ निर्बन्धन स्थिति का अनुभव कर सदैव योगयुक्त स्थिति का अनुभव करो

➳ _ ➳ त्रिकालदर्शी स्थिति में स्थित हो स्वयं को "क्या, क्यों" से मुक्त रखो

➳ _ ➳ लोकिक ज़िम्मेवारियों को खेल समझो

➳ _ ➳ विघनो को अपने लिए पाठ समझो

➳ _ ➳ नशा चड़ाओ

→ हम कुमार 700 ब्राह्मणों से भी उत्तम हैं